P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-5* August- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन

मुकेश बाला
व्याख्याता,
गृह विज्ञान विभाग,
एम० के० पी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
देहरादून

सारांश

सारांश रूप में यह कह सकते हैं कि नवोदय विद्यालय बच्चों के लिए वरदान सिद्ध हो रहे हैं। जो गरीबी के कारण उचित शिक्षा प्राप्त नही कर पाते और नैतिक मूल्यों के अभाव में अपराध प्रवृत्ति में लिप्त हो जाते हैं क्योंकि नवोदय विद्यालय आवासीय विद्यालय होते हैं और इसमें पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता है जिससे हमारे समाज में एक अच्छा नागरिक उत्पन्न किया जा सके। नवोदय विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की अपेक्षा छात्राएं नैतिक मूल्यों में अधिक अच्छी पायी गयी हैं। क्योंकि छात्राएं समाज के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करती पायी गयी।

मुख्य शब्द : नैतिक मूल्य, समाज, व्यक्तित्व, आधुनिकता।

प्रस्तावना

बालक के नैतिक विकास से ही चरित्र और चरित्र व्यक्तित्व को बनाता है परन्तु आज के औद्योगीकरण के युग में आधुनिकता के बहाव में नैतिकता दूर होती जा रही हैं यही कारण है कि नयी शिक्षा नीति के अन्तर्गत मूल्यों जिनमें नैतिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया गया है। समय–समय पर विभिन्न कमीशनों यथा, विश्वविद्यालय शिक्षा कमीशन (1952–53) शिक्षा कमीशन (1964–66) ने भी नैतिक शिक्षा के विकास पर बल दिया। गैसेल ने नैतिक विकास की तीन अवस्थाएं मानी पहली जन्म से लेकर 5 वर्ष के बीच की अवस्था दूसरी 6 वर्ष से लेकर 10 वर्ष की अवस्था इस अवस्था में बालक दबाव पड़ने के कारण अच्छे बुरे की भावना नहीं समझ पाता है। 11 से – 16 वर्ष की अवस्था इस अवस्था में किशोर स्वतन्त्र अभिकर्ता बन जाता है। वह कानून या नियम और माता–पिता की देखभाल की पराश्रयता को त्यागकर समाज में अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित कर लेता है। इस अवस्था में उसका आन्तरिक वेग जगता है उसी के आधार पर वह नैतिक निर्णय करता है। मित्रों और टोली की पूर्ण निष्ठा की ज्यादा कीमत करता है। तर्क शक्ति एवं प्रेम के विकास के कारण उसमें मानसिक अराजकता नहीं आने पाती बल्कि दूसरों की भलाई का ज्यादा ख्याल हो जाता है। कोहलवर्ग ने नैतिक विकास के अन्तर्गत नैतिक निर्णय 6 प्रकार के माने जैसे दण्ड पुरस्कार और विनय पर आधारित सुख–दुख पर आधारित दूसरों की स्वीकृति पर आधारित आपतत्व या सत्ता पर आधारित प्रजातान्त्रिक रूप में स्वीकृत नैतिक नियमों पर आधारित और अन्तर्विवेक पर आधारित।

साहित्यावलोकन

राकेश मिल्टन 1968 ने व्याक्तियों के मूल्यों विश्वासों व्यवहार का अध्ययन किया, जिनमें मूल्यों के मापन हेतु 18 अन्तस्थ (जैसे–प्रसन्नता, स्वतन्त्रता, आत्मसम्मान) से सम्बन्धित तथा दूसरी मापनी 18 साधन मूल्यों (जैसे–आज्ञाकारी, आत्म, संयमी, इमानदारी।) से सम्बन्धित विकसित की। यह मापनी बाद के कई अध्ययनों में प्रस्तुत की गयी।

मखीजा जी के 1973 ने मूल्य अभिरूचि और प्रतिभा में अन्तःक्रिया तथा उसका शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया, अध्ययन से विदित हुआ कि जिन छात्रों को राजनैतिक मूल्यों के प्रति दक्ष नहीं किया गया वह अन्यथा स्थिति वालों की अपेक्षा बुद्धि पर कमजोर डालते हैं।

जैन0 एन0सी0 1962 ए स्टडी 2 मोरल विहैवियर ऑफ एडोलोसेन्टस् एम, एण्ड डिस्टेंशन उदयपुर युनिवर्सिटी।

मखीजा जी के 1973 इन्ट्रेशन अमोब्ग वैल्यूज इन्ट्रेस्ट एण्ड इन्टर्लीजेन्स इम्पेन्ट एन स्फोलोस्टिक एवीवमेन्ट ''पी0एच0डी0 साई आगरा यूनिवर्सिटी।

जैन0एन0सी0–1962 ने किशोरों के नैतिक व्यवहारों का अध्ययन किया और अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि नैतिक चरित्र निर्माण के लिए तीन घटक अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

मूल्य का अर्थ

मूल्य वास्तव में किसी महत्वपूर्ण चीज का प्रतिनिधित्व करते है। मनुष्य जीवन पर्यन्त सीखता रहता है तथा उसके अनुभवों में निरन्तर अभिवृद्धि होती रहती है। मूल्य किसी वस्तु या स्थिति का वह गुण है जो समालोचना व वरीयता प्रकट करती है आक्फर्ड अंग्रेजी शब्दकोष में मूल्य को महत्ता उपयोगिता वांछनीयता तथा उन गुणों जिन पर ये निर्भर है के रूप में परिभाषित किया गया है। मूल्यों की प्रकृति के तीन मत है।

आत्मनिष्ठ

इस मत के अनुसार मूल्य इच्छा, रूचि, पसन्द, मेहनत करने, संकल्प शक्ति कार्य तथा सन्तोष जैसे बहुत कारकों पर निर्भर होते हैं।

वस्तुनिष्ठ मत

मूल्य व्यक्ति से स्वतन्त्र होते हैं। तथा वे व्यक्ति में निहित नहीं होते हैं। उनमें वस्तुनिष्ठा होती है।

अपेक्षिकीय मत

इस मत के पोषक मूल्यों को मूल्य प्रदान करने वाले मानव तथा उसके वातावरण के मध्य एक सम्बन्ध मानते हैं। वह मूल्य को अंशतः भावना अंशतः तर्क समझते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

इस विषय पर अध्ययन की आवश्यकता इसलिए महसूस की गयी है कि वर्तमान समय में माता–पिता बालक को विद्यालय भेज अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझ लेते हैं। अध्यापक मशीन की तरह उसे पढ़ाकर तथा कथित ज्ञानवानों की श्रेणी में ला बैठाते हैं। हमें शिकायत होती है आज की पीढ़ी बुजुर्गों का आदर नहीं करती है, नैतिक मूल्य कमजोर पड़ने से पाश्चात्य समाजों में अनेक गम्भीर सामाजिक और नैतिक संघर्ष पैदा हो गये हैं। एक का आधार है भौतिक सुख और दूसरी का शाश्वत सुख, संघर्ष ने नैतिक मूल्यों को कन्हीं का कन्हीं धकेतन दिया है। अतः माता–पिता और शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि वह बालक के नैतिक मूल्यों पर बल दे क्योंकि बालकों में यह बात देखी जाती है कि वे प्रशंसा और निन्दा के आधार पर किसी कार्य को अच्छा और बुरा समझते है। इसी प्रकार पुरस्कार और दण्ड के आधार पर भी इस अवस्था में बालक अपने बड़े बूढ़ों और शिक्षकों के नैतिक व्यवहारों का भी अनुकरण करता है। बढ़ा होने पर वह अपने विवेक एवं ज्ञान के आधार पर निर्णय लेकर समाज के आदर्शों मूल्यों एवं प्रतिमानों के अनुरूप आचरण प्रारम्भ कर देता है। कभी–कभी घर के खराब वातावरण के कारण बालकों में क्रोध, चोरी की आदत, झूठ बोलना, डर की भावना, दूसरों को तंग करना, घर से भाग जाना, बालपराध इत्यादि समस्याएं उत्पन्न होने लगती है। इन्हीं सब कारणों को देखते हुए नवोदय विद्यालय के छात्र–छात्राओं में नैतिक मूल्यों के अध्ययन को महसूस किया गया है।

फर्नाल्ड हीली और ब्रानर

वास्तव में घर और संगति का भी असर चरित्र पर अधिक पड़ता है। फर्नाल्ड, हीली और ब्रानर आदि मनोवैज्ञानिकों की शोधों से पता चला है कि लगभग 80 प्रतिशत लड़के–लड़कियों के चरित्र बिगड़ने में घर में दूषित या भ्रष्ट वातावरण और बुरी संगति का अधिक हाथ रहता है। इन्होंने नर्सरी स्कूल के बच्चों के भी नैतिक व्यवहार पर उनके साथियों पर प्रभाव पड़ता है। हीली और ब्रानर ने अपराधी बालकों के अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला है कि 62 प्रतिशत अपराध बुरे साथियों द्वारा अभिप्रेरित किये जाते हैं। राकेश मिल्टन 1968 ने व्यक्तियों के मूल्यों विश्वासों व्यवहार का अध्ययन किया जिनमें मूल्यों के मापन हेतु 18 अन्तस्थ मूल्यों (जैसे– प्रसन्ता, स्वतन्त्रता आत्मसम्मानों) से सम्बन्धित तथा दूसरी मापनी 18 साधन मूल्यों (जैसे– आज्ञाकारी, आत्मसंयमी, ईमानदारी) से सम्बन्धित विकसित की यह मापनी बाद में कई अध्ययनों में प्रस्तुत की गयी।

अध्ययन के उद्देश्य

1. नवोदय विद्यालय के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों का करना।
2. शिक्षकों के व्यवहार का छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. पाठ्योत्तर गतिविधियों का छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की उपकल्पना

1. नवोदय विद्यालय की छात्राओं की तुलना में छात्रों के नैतिक मूल्यों में कमी पायी जायेगी।
2. शिक्षकों के व्यवहार का छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों पर धनात्मक प्रभाव पाया जायेगा।
3. पाठ्योत्तर गतिविधियों का छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों पर धनात्मक प्रभाव पाया जायेगा।

स्वतन्त्र चर – शिक्षा, लिंग

आश्रित चर – नैतिक मूल्य

अध्ययन शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में नैतिक मूल्यों को जानने हेतु डॉ0 वी0 भारती अनुसंधान के सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय जबलपुर का परीक्षण मापनी प्रयोग में लायी गयी निदर्शन हेतु म0प्र0 के होशंगाबाद जिला के पवारखेडा में स्थित नवोदय विद्यालय के 75 छात्र एवं 75 छात्राओं का चयन किया गया जिनकी आयु 11 से 13 वर्ष एवं कक्षा 6, 7, 8 निश्चित की गयी।

परिणाम एवं विश्लेषण

छात्र–छात्राओं की ईमानदारी के सन्दर्भ में तालिका

क्र0 सं0	विकल्प	अंक		नवोदय स्कूल	
		छात्र	छात्राएं	छात्र	छात्राएं
1	अध्यधिक उच्च	14–15	13–15	29	31
2	अच्छा	12–13	11–12	27	29
3	साधारण	10–11	9–10	13	11
4	निम्न	8–9	7–8	4	3
5	अत्यधिक निम्न	7 से कम	6 से कम	2	1
	कुल			**75**	**75**

क्र0 सं0	विकल्प	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	
1	छात्र	12.55	2.013		
	छात्राएं	11.79	1.809	10.27	सार्थक

df – 148 के सार्थक के स्तर पर 1.98

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 148 पर t का मान 1.98 है जबकि उपरोक्त तालिका में t का मान 148 पर 10.27 है। जो इस मान से अधिक होने के कारण नवोदय विद्यालय के छात्र–छात्राओं में ईमानदारी के सन्दर्भ में अन्तर पाया जाता है।

नैतिक मूल्य श्रेणी एवं विद्यार्थियों के प्राप्त अंक

क्र0 सं0	विकल्प	अंक	नवोदय स्कूल	
		छात्र	छात्र	छात्राएं
1	अध्यधिक उच्च नैतिक मूल्य	46 एवं उससे अधिक	31	38
2	अच्छा नैतिक मूल्य	37–45	24	22
3	साधारण नैतिक मूल्य	28–36	13	9
4	निम्न नैतिक मूल्य	19–27	4	4
5	अत्यधिक निम्न नैतिक मूल्य	18 एवं उससे कम	3	2
	कुल		**75**	**75**

क्र0 सं0	विकल्प	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	
1	छात्र	41.36	22.836		
	छात्राएं	42.8	9.178	4.390	सार्थक

df – 148 के सार्थक के स्तर पर 1.98

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 148 पर t का मान 4.390 सार्थक है क्योंकि यह मान 5 प्रतिशत के विश्वास मान एवं 1 प्रतिशत के विश्वास मान से अधिक है। नवोदय विद्यालय के छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों में अन्तर पाया जाता है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि छात्राओं की तुलना में छात्रों के नैतिक मूल्यों में कमी पायी गयी है। शिक्षकों के व्यवहार का भी छात्र–छात्रों नैतिक मूल्यों पर धनात्मक प्रभाव पाया गया। पाठ्योत्तर गतिविधियों का छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों पर धनात्मक प्रभाव नहीं पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अरूप रंजन राय (1992) सन् 2010 तक नवोदय ग्रामीण प्रतिभा विकास का सार्थक प्रयास विषय पर एक अध्ययन लघुशोध प्रबन्ध।*
2. *अग्रहरि गुप्ता नत्थूलाल (2000) मूल्य परक शिक्षा और समाज नमन प्रकाशन नई दिल्ली।*
3. *भारती बी, नैतिक मूल्य परीक्षण विद्या भारती प्रकाशन जबलपुर।*
4. *भटनागर सुरेश एण्ड कुमार संजय 2000 भारत में शिक्षा का विकास।*
5. *गुप्ता रूमबाबू 1977 सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण सामाजिक प्रकाशन विज्ञान कानपुर।*
6. *कौशिक एन0के0 2005 नर्मदाजलि जवाहर नवोदय विद्यालय।*
7. *मिश्र आत्यानंद शिक्षा की समस्याऐं म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ।*
8. *रिसर्च लिंक अंक–7 जून अगस्त 2003 पृ0 69*
9. *रिसर्च लिंक 11 मार्च –मई 2004 पृ0 96*
10. *शर्मा बी0एल0 2003 पर्यावरण और मानवमूल्यों के लिए शिक्षा एच0पी0 भार्गव बुक्स हाउस कचहरी घाट आगरा*
11. *सूरती डॉ0 उवर्शी 1974 नैतिक शिक्षा और बाल विकास प्रभाव प्रकाशन चावड़ी बाजार दिल्ली।*